1

जल प्रलय से पहले का काल

सृष्टि से लेकर प्रलय आने तक, 4004-2348 ई.पू. (उत्पत्ति 1:1-8:13)

परिचय के लिए: उत्पत्ति की पुस्तक। -उत्पत्ति (वंशावली, प्रारम्भ) ''प्रारम्भ की पुस्तक'' है। उत्पत्ति 1:1 सब वस्तुओं के प्रारम्भ के बारे में बताती है। ''... की उत्पत्ति'' वाक्यांश निम्न प्रकार से दस बार आता है: ''आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तांत,'' उत्पत्ति 2:4; ''आदम की'' 5:1; ''नूह की'' 6:9; ''नूह के पुत्र ... उनके पुत्र'' 10:1; ''शेम की'' 11:10; ''तेरह की'' 11:27; ''इश्माइल की'' 25:12; ''इसहाक की'' 25:19; ''एसाव की'' 36:1; ''याकूब के'' 37:2. फॉर्मूले के रूप में इसका बार-बार इस्तेमाल कोई अचानक होने वाली घटना नहीं है। उत्पत्ति की पुस्तक का लेखक विवेकपूर्ण ढंग से इतिहास के मूल अर्थात सबसे पहली बातों के आरम्भ में लिख रहा है। प्रारम्भ में बाइबल की पहली पुस्तक की इस विशेष बात ने ध्यान आकर्षित किया, इसलिए इसे ''उत्पत्ति'' की पुस्तक कहना उचित था।

1. सृष्टि की उत्पत्ति (उत्पत्ति 1:1)। -*क. समस्या का चित्रण।*-लोहे से हम हथौड़े, भाले, सूइयां या घड़ी की सूइयां तक बना सकते हैं लेकिन इसे सृष्टि नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह तो पहले से मौजूद वस्तु का रूप परिवर्तन है। लोहा कहां से आया? इसे किसने बनाया? सूर्य, तारे, समुद्र और जीवन के असीम रूपों को सृष्टि कहते हैं। लेकिन प्रश्न यह नहीं है कि किसी चीज़ का रूप परिवर्तन कैसे हुआ बल्कि यह है कि उसे वह मूल रूप मिला कैसे था।

ख. समस्या सुलझती है। -युगों से समस्या में तर्क ने काम किया है। ''अनन्तकाल से''; ''अपने आप बनी''; ''संयोग'' जैसे समाधान सुझाए जाते थे। दूसरे समाधानों को बहुदेववाद की बात से बिगाड़ दिया जाता था। विचारों की इस उलझन में, हमारा लेखक देखता है कि इसमें संयोग की कोई बात ही नहीं है अर्थात कुछ भी ऐसा नहीं है जो अपने आप अस्तित्व में आया हो, अर्थात जो कुछ भी बना है उसके पीछे कोई न कोई अवश्य है। परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाली उसकी कलम की एक बात ने इस समस्या को सुलझा दिया है; ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।''[1] समाधान तो परमेश्वर ही है। परमेश्वर के अस्तित्व स्वीकार को मान लेने से बाकी सब उलझनें अपने आप हल हो जाती हैं। ''उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया'' (भजन 33:9)।

ग. समय। –''आदि में।'' विज्ञान संसार के लाखों-करोड़ों सालों से होने की बात करता है। उत्पत्ति की पुस्तक ''आदि में'' कहकर ही सब बातों का जवाब दे देती है।

2. व्यवस्था का आरम्भ (उत्पत्ति 1:2-2:3)। -सृष्टि की रचना (क) *समयपूर्व अव्यवस्था* अर्थात ''बेडौल और सुनसान''; (ख) *संगठित होने वाली ऊर्जा* अर्थात ''गहरे जल के ऊपर परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था''[2]; (ग) *छह क्रमबद्ध दिनों की ओर ध्यान दिलाती है।* (1) प्रकाश की उत्पत्ति। लैपलेस नैज़्यूलर हाइपोथिसिस (अर्थात निहारिका परिकल्पना, जो सौर मण्डल व तारा मण्डल के धुंधले पदार्थ से बने होने की शिक्षा देती है। उन्नीसवीं शताब्दी में लैपलेस द्वारा संक्षिप्त रूप से बनाने के बाद यह शिक्षा काफ़ी प्रसिद्ध हुई थी) का जनक था। यह शिक्षा उत्पत्ति का समर्थन करने के लिए नहीं बल्कि सृष्टि का वर्णन करने के लिए विकसित की गई थी। इस शिक्षा के अनुसार गैसीय पदार्थ तेज़ गर्मी के प्रकाश में उत्सर्जन से इकट्ठे हुए थे। सूर्य को रोशनी दिखाने पर लोग मूसा को तो मूर्ख कहते हैं, परन्तु वही काम करने पर लैपलेस को वैज्ञानिक कहा जाता है। (2) अंतरिक्ष या उत्पत्ति। पृथ्वी की पपड़ी ठण्डी हो गई; भाप का घना ढज़्कन सघन होकर बारिश के रूप में गिर गया या बादल बनकर उठ गया, और आकाशमण्डल विशाल नीले तज़्बू की तरह फैल गया। (3) महाद्वीपों, सागरों तथा वनस्पति की उत्पत्ति। ऐसा लगता है कि किसी समय सारा संसार ही एक समुद्र था, कोई महाद्वीप, द्वीप या सागर किनारा नहीं था। परमेश्वर बात करके बताता है कि महाद्वीप महासागर की चादर में से उठे हैं; द्वीपों से समुद्र सुन्दर लगते हैं जो पहले नंगे और बंजर होते हैं, परन्तु समय के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की वनस्पति को ओड़ लेते हैं। (4) सूर्य, चांद और तारों की उत्पत्ति। सृष्टि की उत्पत्ति के इतिहास को ''अद्‌भुत'' या ''विशाल दृश्य'' अर्थात पृथ्वी से देखने वाले के लिए एक-एक घटना का वर्णन करती बात कहा जा सकता है। नि: संदेह आकाशीय पिण्ड चौथे दिन से पहले भी थे, परन्तु तब वे पृथ्वी पर पहली बार दिखाई दिए थे। (5) समुद्री जीव तथा जन्तुओं की उत्पत्ति। जीवन रेखा पार हो जाती है। इससे पहले पृथ्वी पर कोई जीव टहलता नहीं था, न कोई पक्षी हवा को चीरता था, और न ही कोई मछली समुद्र में तैरती थी। एक बार फिर ईश्वरीय आदेश दिया जाता है और वायु और समुद्र में जीवन तैरने लगता है। यह घोंघे, सीपियों, रेंगने वाले जन्तुओं और मछलियों का युग है। (6) पृथ्वी पर जीवन और मनुष्य की उत्पत्ति। छठे दिन की विशेष बात मनुष्य है; मनुष्य की विशेषता यह है कि वह परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया (उत्पत्ति 1:27)। इस अध्याय में ''बनाना'' शज़्द का तीन बार इस्तेमाल हुआ है: 1:1 में, सृष्टि के बनाने का; 1:21 में, जंतुओं के जीवन का; 1:27 में मनुष्य की उत्पत्ति का। पहला इस्तेमाल अस्तित्वहीन से अस्तित्व में होने की रेखा को पार करता है, दूसरा निर्जीव और सजीव की रेखा को पार करता है, तीसरा पशु और मनुष्य के बीच की रेखा को पार करता है। मनुष्य पृथ्वी की तरह है जिसमें वह लौट जाता है, पौधों के जीवन की तरह जिसकी जड़ें मिट्टी में हैं, और पशुओं की तरह है जो इसकी सतह पर घूमते हैं। लेकिन वह ऊपर को देखता है जबकि वे नहीं देखते। (i) समझ रखने की शज़्ति में वह परमेश्वर के स्वरूप में हैं। मनुष्य से पहले सृष्टि में तरतीब और सुन्दरता तो

थी पर उस तरतीब या सुन्दरता की तारीफ़ करने वाला, या कारण और कार्य को बनाने के लिए पृथ्वी पर कोई नहीं था। केवल परमेश्वर ही उसे बना सकता था अर्थात परमेश्वर के स्वरूप पर बना मनुष्य ही परमेश्वर की सृष्टि की योजना तथा सुन्दरता को समझ सकता है। (ii) चेतना शक्ति में, समझदार, उपयुक्त भावना में वह परमेश्वर के स्वरूप में है। (iii) समझदारी से पसन्द करने की शक्ति में वह परमेश्वर के स्वरूप में है। (iv) नैतिक स्वभाव में, सही या गलत की समझ में वह परमेश्वर के स्वरूप में है। (v) नियन्त्रण करने में वह परमेश्वर के स्वरूप में है। ''अधिकार रखें''[3] वाक्यांश उसका ''उपनिवेशक स्वभाव'' है। इसमें उसे पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं के विषय में उसका पद मिल जाता है। इसमें भौतिक सृष्टि में नैतिक अर्थ मिलता है: इसका लक्ष्य मनुष्य है, और मनुष्य की सबसे बड़ी मंज़िल परमेश्वर है।

सृष्टि के इतिहास की एक या दो विशेष बातों पर टिप्पणी करनी आवश्यक है। (1) विज्ञान के स्थापित परिणामों के साथ इसकी अद्‌भुत एकता का अर्थ है कि उत्पत्ति हुई थी; व्यवस्था से पहले अव्यवस्था थी; कि सृष्टि की रचना एक ही बार नहीं बल्कि एक-एक करके हुई; कि यह विकास होने से बढ़ी; कि यह विकास नीचे से ऊपर तक का था; और अन्त में, एक-एक करके चीज़ों के बनने की बात पर दोनों में सहमति है। ज़्या उत्पत्ति की पुस्तक का पहला अध्याय कोरा तुक्का है? ज़्या डार्विन या टिंडेल या हज़्सले ने किसी अवैज्ञानिक युग में इतना अच्छा अनुमान लगाया होगा? (2) यह पूरा इतिहास नहीं है। इतिहास में जानकारी के लिए मानवीय स्रोतों अर्थात मौखिक परम्परा, लिखित नियमों, दस्तावेज़ों व प्राचीन स्मारकों का इस्तेमाल किया जाता है। किसी परम्परा से हमें यह पता नहीं चल सकता कि मनुष्य कैसे बना था। इसके लिए ज्ञान बढ़ाने वाला अलौकिक प्रकाशन ही आवश्यक था। आरम्भ से अंत तक बाइबल यही ज्ञान देती है। अज्ञात अतीत और अज्ञात भविष्य उन दर्शनों में प्रकाशमान हो जाता है जिनसे बाइबल आरम्भ और समाप्त होती है।

3. पाप की उत्पत्ति (उत्पत्ति 2:4-3:24)। -उत्पत्ति 1:1-2:3, सृष्टि की रचना का सामान्य विवरण है। पवित्र शास्त्र के इस खण्ड में मनुष्य के इतिहास का विशेष रूप से विस्तृत वर्णन किया गया है। पहले खण्ड में इसका विषय मनुष्य के साथ प्रकृति है। सारी प्रकृति का असीम, समझदार स्रोत परमेश्वर ही है। दूसरे खण्ड में मनुष्य ही सबसे महत्वपूर्ण विषय है। यहां पर उसे अपने सृष्टिकर्ता के स्वरूप पर होने के कारण, सृष्टि के मुकुट तथा प्रभु के रूप में दिखाया गया है।

क. आदम युग की स्थिति। -यहां पर हम सही इतिहास में पहुंचते हैं। ज्ञान के मानवीय स्रोतों के लिए प्रकाशन की आवश्यकता होती है। आदम युग का हमारा ज्ञान हमें (1) मनुष्य के ठिकाने तक ले जाता है। यह ठिकाना अदन नामक स्थान में था। दो प्रसिद्ध नदियां, फरात और हिद्देकेल (टिगरिस) हमारा ध्यान दक्षिण पूर्वी एशिया की ओर ले जाती हैं। आधुनिक वैज्ञानिक खोज द्वारा जिस प्रसिद्ध परम्परा की पुष्टि हुई है, वह कौकसस के दक्षिण के पर्वतों में मनुष्य जाति के पालने के रूप में ध्यान खींचती है। (2) समाज। मनुष्य को इसलिए नहीं बनाया गया था कि अकेला रहे और न उसे असभ्य जीवन के उच्च रूपों के

साथ वास्तविक संगति के लिए बनाया गया था। उसके जीवन की ऊंचाइयों को केवल उसकी तरह के और पारिवारिक जीवन में रहकर ही पाया जा सकता है। हव्वा की सृष्टि से सबक मिलता है कि मनुष्यजाति के लिए एकता और बराबरी दोनों आवश्यक हैं। (3) व्यवसाय। मनुष्य को बेकार रहने के लिए नहीं बनाया गया। बेकार रहने से जंग लग जाता है अर्थात मनुष्य का नैतिक पतन हो जाता है। इसलिए उसे अदन के बाग को संवारने और उसकी रक्षा करने के लिए रखा गया था। (4) नैतिक स्थिति। इतिहासकार परमेश्वर के साथ संपूर्ण संगति अर्थात पूर्ण अबोधता और भरोसे की आशीष की, पूर्ण स्वतन्त्रता की केवल एक निषेध के साथ कि ''भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना,''[14] पूरी स्वतन्त्रता ''कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है''[15] की बात करता है। स्वतन्त्रता की एक सीमा होती है। मनुष्य के लिए व्यवस्था का सज़्मान करना आवश्यक है और अपनी स्वार्थी इच्छा को सब के भले के लिए दबा देना आवश्यक है। चाहे उसे पृथ्वी पर सारा अधिकार भी मिल जाए, तो भी परमेश्वर के अधीन रहना चाहिए।

ख. अपराध। –पाप और पापी पहले से ही संसार में हैं। दोनों का परिचय बाग–ए–अदन से हुआ था। सर्प शैतान के प्रतीक या उसके भेजे हुए के रूप में बाग में आता है (तु. यूहन्ना 8:44; प्रकाशित 12:9; 20:2)। परीक्षा में पड़ने और पाप के ढंग पर ध्यान दें। हमारे मन में एक प्रश्न उठता है: ''ज़्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इसे ... न खाना?'' फिर एक चालाकी भरा झूठ आता है: ''तुम निश्चय न मरोगे।''[16] उसके बाद धीरे–धीरे, परमेश्वर में अविश्वास, बुरी इच्छा, गलत पसन्द, खुले तौर पर आज्ञा न मानना होता है। परमेश्वर के आने से सच्चाई का विश्वास, परमेश्वर में भरोसा, सही इच्छा, सही पसन्द, खुलकर परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पण करना आता है।

ग. दण्ड। –इसके बाद स्वाभाविक, *अर्थात अनिवार्य* परिणाम के रूप में, दोष और बाहर निकाले जाने की समझ के कारण आदम और हव्वा ''छिप गए।''[17] उन्हें न्यायिक दण्ड भी मिला; स्त्री को मिले दण्ड के अनुसार, उसके जनने की पीड़ा बढ़ा दी गई; पुरुष को मिले दण्ड के अनुसार उसके परिश्रम को बढ़ा दिया गया; इसके बावजूद दोनों को एक आशा दी गई, कि प्रतिज्ञा किया हुआ वंश आकर सर्प का सिर कुचलेगा। उत्पज़ि 3:15 में छिन गए अदन के द्वार पर ही, हमें छुटकारे के मसीह के काम की पहली अस्पष्ट सी भविष्यवाणी मिलती है।

4. सृष्टि की गूंज तथा मनुष्य का पाप में गिरना। –प्राचीन साहित्य में यहां लिखे कई महान तथ्य मिलते हैं।[18] परन्तु वे अधर्मी भावनाओं से भरे हैं, और परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई शानदार बातों से गिर गए हैं। ''सृष्टि की रचना की कहानी की तरह, मनुष्य के पाप में गिरने की कहानी सारे संसार में प्रसिद्ध है। मूर्तिपूजक देशों ने इसे लेकर अपने भूगोल, अपने इतिहास, अपने मिथ में मिला लिया है, यद्यपि उनकी शिक्षा पूरी तरह ऐसे नहीं बदली कि आप इसे पहचान ही न सकें। परन्तु, व्यवस्था में इसमें मनुष्य का विश्वव्यापी स्वभाव, इसका रूप, विश्वव्यापी तथ्य का चरित्र और सृष्टि की कराहना और उस छुटकारे

का वर्णन मिलता है जो यीशु मसीह में है और उनकी गवाही से इस वृज़ांत के सबसे मूल सत्य के लिए हर व्यज़्ति का मन उसके साथ होकर काम करता है।''[9]

5. बलिदान का आरज़्भ (उत्पज़ि 4:1-15)। -इस पहले मानवीय परिवार में बच्चों ने धूप व छाया के दोनों रंग दिखा दिए। ये दोनों भाई अलग-अलग व्यवसाय करते थे और इन्होंने अलग-अलग बलिदान भेंट किए थे। दोनो में बहुत बड़ा अन्तर था। कैन हल जोतने वाला किसान था, जबकि हाबिल भेड़ें पालता था। एक तो अनाज का पहला फल अर्थात धन्यवाद की भेंट लेकर आया, जबकि दूसरा पाप बलि के रूप में झुंड में से पहलौठा लाया। कैन की भेंट ऐसी थी जो अदन में रहते हुए अपने भोलेपन में आदम और हव्वा ने कभी दी होगी। इसमें न तो पाप का कोई बोध था और न क्षमा के लिए प्रार्थना। इससे भी बढ़कर यह कि कैन में अपने भाई हाबिल जैसा विश्वास नहीं था (इब्रानियों 11:4)। हाबिल की तुलना में वह अविश्वासी, अपने आप में धर्मी व अपनी इच्छा पूरी करने वाला था। अदन के द्वार पर वह फरीसी और चुंगी लेने वाले की तरह था। कैन की घृणा ने उसे हत्या करने के लिए उकसाया जबकि हाबिल की निष्ठा ने उसे शहीद बनने के लिए तैयार किया: एक तो लहू के दाग वाले लोगों की लज़्बी कतार में सबसे प्रथम; और दूसरा, परमेश्वर के नायकों की शानदार भूमिका निभाने में प्रथम।

6. कैन की परिवार रेखा (उत्पज़ि 4:16-26)। -कैन का एक पुत्र था, हनोक और उसने अपने पुत्र हनोक के नाम पर एक नगर बसाया था। जैसा बाप वैसा बेटा। कैन की संतान भी अधर्मी ही थी। कैन, हनोक, ईराद, महूयाएल, मतूशाएल, लेमेक, एक ही वंश के हैं। नि:संदेह कैन के और भी वंशज थे। इनका नाम इसलिए दिया गया है ज़्योंकि इसके अंत में लेमेक है, जिससे परिवार की रेखा आगे बढ़ती है। लेमेक की दो पत्नियां थीं जिनसे तीन पुत्रों: यूबाल जो संगीतकार; याबाल जो जानवरों को पालने वाला; और तूबल्कैन जो पीतल और लोहे के सभी धार वाले हथियार बनाने वाला था, का जन्म हुआ। कैन की हिंसात्मक प्रवृज़ि लेमेक में फिर से दोहराई जाती है, जैसा कि उसके ''तलवार के गीत'' में पता चलता है:

> हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो; हे लेमेक की पत्नियो, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक पुरुष को जो मेरे चोट लगाता था, अर्थात उस जवान को जो मुझे घायल करता था, घात किया है (उत्पज़ि 4:23)।

इस संक्षिप्त विवरण से दो सबक मिलते हैं: (1) संस्कृति ईश्वरीय उपहार नहीं बल्कि पूर्ण मानवीय विकास है। (2) संस्कृति को धर्म या इसका विकल्प नहीं मानना चाहिए। कैन की पारिवारिक रेखा में हमें संसार की सबसे पहली बातें अर्थात हत्या, नगर, बहुपत्नीवाद, संगीतकार, धातु के काम करने वाले, कवि मिलती हैं; लेकिन ''परमेश्वर के साथ चलने वाले'' लोगों का एक भी उदाहरण नहीं मिलता।

7. शेत की परिवार रेखा (उत्पज़ि 5)। -बेशक शेत के बाद आदम के और भी पुत्र हुए जिनसे और संतानें उत्पन्न हुईं। लगता है कि इस रेखा को इसलिए सज़्भालकर रखा गया था ज़्योंकि यह नूह तक जाती है, जो इसके अच्छे गुणों का प्रतिनिधि है और जिसके द्वारा यह

वंश आगे बढ़ा और प्रतिज्ञा किए हुए वंश ने आना था। इस वंश की रेखा में निज़्न दस नाम हैं: आदम, शेत, एनोश, केनान, महललेल, येरेद, हनोक, मतूशेलह, लेमेक, नूह। पहली नज़र में लगता है कि यह परिवार के लोगों के जन्म, आयु व मृत्यु का लेखा-जोखा है और विशेष तौर पर कैन की संतान के नामों से मिलता-जुलता है। परन्तु इस बारे में कम बताया जाना उस रेखा से जबर्दस्त भेद रखता है। नूह और एनोश के दिनों में ही, ''लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे''[10]; ''हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था; फिर वह अलोप हो गया ज़्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया''[11] जो ईश्वरीय सहभागिता तथा धन्य अनश्वरता दोनों के लिए एक अच्छी बात थी। नूह ''धर्मी पुरुष'' था और ''परमेश्वर के साथ-साथ चलता'' था।[12] कैन और शेत की इन दो परिवार रेखाओं का इतिहास इतना अपर्याप्त होने के बावजूद दोनों की तस्वीरों में बहुत अन्तर है।

8. विश्वास का त्याग व प्रलय (उत्पज़ि 6:1-8:14)। *-क. प्रलय के सज़्बन्ध में परज़्पराएं।* -इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये अध्याय एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना का वर्णन करते हैं। अदन की बातें और मनुष्य का पाप में गिरना, जैसा कि हम देख चुके हैं बहुत से प्राचीन साहित्यों में मिलता है। लेकिन बाइबल इतिहास की प्रारज़्भिक घटनाओं वाले प्रलय जितनी विस्तृत घटना किसी में नहीं है। इसने एक गहरा, स्थायी प्रभाव छोड़ा। इसकी परज़्पराएं चार बड़ी जातियों, तुर्क, हामी, सामी और आर्य लोगों में मिलती हैं। उनमें काफी भिन्नता है; कई तो बहुत से देवी-देवताओं को मानने वाले हैं लेकिन जो उस जगह के सबसे निकट थे जहां जहाज़ रुका था, वे अधिक सही हैं। चीनी, हिन्दू, कसदी, मिसरी, यूनानी, कैल्ट, लैपसों, एसकिमों, मैज़्सिकियों, केन्द्रीय और दक्षिणी अमेरिकी सब लोगों ने अपनी परज़्परा को सज़्भाले रखा है। इनमें से कसदी जाति सबसे प्रसिद्ध है और बाइबल के वृज़ांत के सबसे निकट है। इसका अस्तित्व दो रूपों में है: (1) बेबिलोन (बाबुल) के एक याजक बिरोसस और यूनान में 260 ई. पू. में लिखा था। कई सदियों से यह प्रसिद्ध है। (2) पच्चीस शताज़्दियों की नींद के बाद, 1872 में नीनवे के खण्डहरों की खुदाई से मिली ज़्यूनीफोम तज़्तियां।[13]

ख. प्रलय के नैतिक कारण। -जल प्रलय केवल सांसारिक विध्वंस ही नहीं था, बल्कि यह बहुत बड़ी नैतिक घटना थी। उत्पज़ि 6:5 पढ़ें। समाज का पूरी तरह से नैतिक पतन हो चुका था, इससे कोई आशा नहीं बची थी। विश्वास के त्याग के कारण ढूंढ़ने कठिन नहीं हैं। उत्पज़ि 6:1-5 पढ़ें। याद रखें कि कैन और शेत की दो परिवार रेखाओं के बारे में ज़्या कहा गया है। यह सज़्भव है कि यह पतन शेत की संतान (''परमेश्वर के पुत्रों'') के कैन की संतान (''मनुष्यों की पुत्रियों'') के साथ अन्तर्विवाह के कारण हुआ हो।[14] जैसा कि बुराई से समझौता करने पर होता है, सारे लाभ गलत दिशा में चले गए। वैसे ही विश्वास को त्यागने का नतीजा मनुष्यजाति का विनाश हुआ। जितना बड़ा अपराध हो उतना ही बड़ा दण्ड मिलता है। घोर अपराधी को जीवन भर के लिए जेल में डाल देते हैं या उसे फांसी दी जाती है। जल प्रलय से पहले के लोग अपने अपराधों के लिए धरती से मिट जाने वाले अंतिम लोग नहीं थे। प्रलय के पानी, सदोम पर हुई आग की वर्षा, महामारी, युद्ध ये सब

न्याय के लिए परमेश्वर के संदेशवाहक हैं।

ग. जल प्रलय के साधन।–जिसने पृथ्वी को बनाया है उसके पास इसे नाश करने के भी ढंग हैं। मनुष्य के युग से पहले, बार–बार पृथ्वी वर्षा और सागर से डूबी होगी। गहरे जल के स्रोत फूट निकले थे और आकाश की खिड़कियां खुल गई थीं (उत्पत्ति 7:11)। जो कुछ पृथ्वी पर मनुष्य के आने से पहले होता रहा होगा वही परमेश्वर के प्रबन्ध में किसी बड़े नैतिक उद्देश्य के लिए बार–बार हुआ होगा। पश्चिमी एशिया के कुछ भाग अभी भी समुद्र तल से नीचे हैं और दूसरे कई भाग उन्हें जल में बहाकर पृथ्वी से साफ कर सकते हैं।

घ. जल प्रलय का समय और सीमा। चालीस दिन तक वर्षा होती रही। 150 दिन तक जल स्तर ऊपर चढ़ता रहा, और 225 दिनों बाद नीचे उतरा। यह जल या तो पूरे विश्व में आया या वहां आया था जहां मनुष्य जाति के इतिहास के प्रारंभिक दिनों में लोग रहते थे। दोनों ही विचार विश्वव्यापी परंपरा में पाए जाते हैं।

ङ *नूह तथा जल प्रलय।*–कुछ नाम प्रसिद्ध घटनाओं से सदा के लिए जुड़ जाते हैं। जैसे लिंकन का नाम दासता से छुटकारे के लिए, गांधी का नाम देश को स्वतन्त्र कराने के लिए, क्रॉमवैल का नाम कॉमनवैल्थ के साथ, मूसा का नाम मिसर से निकलने के साथ जुड़ा हुआ है, वैसे ही नूह का नाम जल प्रलय से जुड़ा हुआ है। उत्पत्ति 6:9; 7:1; यहेजकेल 14:14 पढ़ें। नूह परमेश्वर का जन अर्थात लोगों के परमेश्वर से दूर जाने के समय भी एक धर्मी पुरुष था। परमेश्वर के लिए भेंट चढ़ाने वाली वेदियां एक के बाद एक टूट गई थीं, लेकिन नूह की वेदी की आग को प्रलय का पानी भी नहीं बुझा पाया था। इसके लिए अकेले खड़े होकर साहस दिखाना आवश्यक था। नूह का आज्ञा–पालन और सुरक्षा, संसार के दूसरे लोगों का निराशाजनक विनाश–ऐसे ही प्रभावशाली सबक हैं। एक सौ बीस वर्ष तक नूह पूरी निष्ठा से प्रचार करता रहा और हियाव से लोगों के बीच रहा। केवल सात मन बदलने वाले लोगों को अर्थात उसकी पत्नी, उसके पुत्रों, शेम, हाम, याफेत को अपनी पत्नियों के साथ उसके परिश्रम का फल मिला। फिर भी नूह सफल रहा था क्योंकि उसने अपना कर्त्तव्य पूरा किया था और जल प्रलय से उसका बचाव हो गया।

पाद टिप्पणियां

[1]उत्पत्ति 1:1. [2]उत्पत्ति 1:2. [3]उत्पत्ति 1:26. [4]उत्पत्ति 2:16. [5]उत्पत्ति 2:1716. [6]उत्पत्ति 3:1,4. [7]उत्पत्ति 3:8. [8]गेकी की पुस्तक ''आर्स विद द बाइबल'' अंक 1, अध्याय 8 देखिए. [9]स्मिथ'स ओ. टी. हिस्टरी, पृष्ठ 29 में उद्धृत, डैलिश. [10]उत्पत्ति 4:26. [11]उत्पत्ति 5:24. [12]उत्पत्ति 6:9. [13]गेकी की पुस्तक ''आर्स विद द बाइबल'' अंक 1, अध्याय 13 देखिए. [14]उत्पत्ति 6:2.